विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 3 : नई दिल्ली : 12-18 अप्रेल 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों की सानन्द सुखसातापूर्वक यात्रा करते हुए मदुरै के सन्निकट पधार गए हैं। हालांकि गर्मी इन दिनों प्रखरता लिए हुए हैं, फिर भी सायंकाल सूर्य ढलने के बाद सूर्योदय तक प्रायः मौसम में सहज शीतलता व्याप्त रहती हैं। आचार्यप्रवर आगामी ४ मई को ईरोड़ में पधार जाएंगे, वहां ७ मई को समायोज्य अक्षयतृतीया कार्यक्रम में शताधिक व्यक्ति पूज्यसन्निधि में वर्षीतप का पारणा करेंगे, ऐसी सूचना प्राप्त हुई है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आचार्यप्रवर ईरोड़ के एक मुमुक्षु भाई को मुनि दीक्षा भी प्रदान करेंगे। पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर १२ मई को सेलम में पधारेंगे, वहां १३ व १४ मई को क्रमशः आचार्यप्रवर के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव के कार्यक्रम समायोज्य हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

आचार्यश्री! आप जिनशासन के यश को फैला रहे हैं

२६ मार्च। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः पानागुड़ी से वेलीऊर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में पानागुड़ीवासियों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। विहार के दौरान कन्याकुमारी की ओर गति करती हुईं स्थानकवासी श्रमणसंघ की साध्वी सुमित्राजी आदि छह साध्वियों ने पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। वे बोलीं--'आचार्यश्री! आप इतनी लम्बी यात्रा कर जिनशासन का यश फैला रहे हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री शिवमुनिजी का जब मिलन हुआ था, तब आपसे मिलना हुआ था। उसके बाद मन में आपसे पुनः मिलने की बहुत भावना थी, आज वह पूर्ण हो गई।' आचार्यप्रवर ने उन्हें फरमाया--'आगम स्वाध्याय चलता रहे, खूब अच्छा कार्य चलता रहे।' साध्वियों ने आचार्यप्रवर से मंगलपाठ भी सुना। तदुपरान्त आचार्यप्रवर अपने गंतव्य की ओर बढ़ गए और साध्वियां अपने गंतव्य की ओर।

वेलीऊर में चेन्नई के एक जैन भाई की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर विहार मार्ग के समानांतर मार्ग पर पधारे। एक मकान के निकट उस भाई और उसके परिवार ने दर्शन कर उन्होंने बताया कि इस मकान में कन्याकुमारी जाने व वहां से लौटने वाले साधु-साध्वियां का प्रवास होता रहता है। आचार्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण आसीन होकर उस परिवार को उपासना का अवसर प्रदान किया।

पूज्यप्रवर लगभग १२.२ कि.मी. का विहार कर वेलीऊर में स्थित विवेकानन्द केन्द्र मेट्रिक हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के कॉरस्पोंडेंट श्री एस.के. सुब्रह्मण्यम, प्रिंसिपल श्रीमती आर. अंदाल आदि शिक्षक तथा विद्यार्थी पूज्यप्रवर की अगवानी में मुख्यद्वार पर उपस्थित थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही उन्होंने श्रीचरणों में अपनी प्रणति अर्पित करते हुए भावपूर्ण स्वागत किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में समय के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की।

विवेकानन्द केन्द्र की शिक्षिका श्रीमती बी. मारी ने आचार्यप्रवर का परिचय प्रस्तुत किया। विद्यालय की छात्राओं ने प्रार्थना को प्रस्तुति दी।

प्रिंसिपल श्रीमती आर. अंदाल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'हमारे लिए आज का दिन अत्यन्त सौभाग्य

का दिन है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से हमारे विद्यालय का सम्पूर्ण परिसर आध्यात्मिकता और पवित्रता से ओतप्रोत बन गया है। मैं आचार्यश्री का हमारे इस प्रांगण में सादर स्वागत और अभिनंदन करती हूं। विद्यालय में आपकी उपस्थिति से हम सभी अत्यन्त आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। आपकी शिक्षाओं और आपके आशीर्वाद से हमारा यह विद्यालय प्रगति की राह पर निरंतर आगे बढ़ता रहेगा।

विद्यालय की छात्राओं ने नमस्कार महामंत्र आदि के आधार पर 'भारत नाट्यम' विधा में अपनी प्रस्तुति दी। छात्राओं द्वारा शान्ति मंत्र को भी प्रस्तुति दी गई। विद्यालय के कोरस्पोंडेंट श्री एस. के. सुब्रह्मण्यम ने पूज्यप्रवर को साहित्य उपहृत किया। आचार्यप्रवर ने विद्यालय परिवार को अंग्रेजी भाषा में पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार कराई। शिक्षिका श्रीमती एस. मलिका ने आभार ज्ञापित किया। विद्यालय से संबंधित उपक्रम का संचालन शिक्षिका एस. देवी ने किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण और प्रवास से विद्यालय परिवार अभिभूत था। विद्यालय के अधिकारी, शिक्षक और अन्य लोग यदा-कदा पूज्यसन्निधि में पहुंचकर दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित बन रहे थे।

सायंकाल करीब ५ बजे आचार्यप्रवर वेलीऊर से दलपति समुद्रम की ओर प्रस्थित हुए। विद्यालय के कोरस्पोंडेंट श्री एस. के. सुब्रह्मण्यम तथा प्रिंसिपल श्रीमती आर. अंदाल ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। करीब ५.३ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर दलपति समुद्रम में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज रात्रि का प्रवास यहीं हुआ।

शरीर का सार निकाल रहे हैं मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी

३० मार्च। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः दलपति समुद्रम से नंगुनेरी की ओर प्रस्थित हुए। आज 'पवन चक्की' कहीं-कहीं ही दृष्टिगोचर हो रही थी। आसपास के खेतों में हरियाली भी बहुत ही कम थी। करीब १४.६ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नंगुनेरी में स्थित सेन्ट फ्रांसिस मेट्रिकुलेशन स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में श्रावक के तीन मनोरथों की चर्चा की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हमारे धर्मसंघ में कितने-कितने संथारे हुए हैं, कितनी तपस्याएं हुई हैं। वर्तमान में मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी, जो सरदारशहर में हैं, संलेखना-साधना में लगे हुए हैं, शरीर का मानों कि सार निकालने में लगे हुए हैं। यह बहुत विशेष बात है। अभी शरीर संभवतः इतना अक्षम भी नहीं है, फिर भी मानों शरीर की सक्षम अवस्था में संलेखना में लग गए। वैसे यह कठिन कार्य है, किन्तु शूरवीर के लिए क्या कठिन है।'

सायंकाल विद्यालय की प्रिंसिपल सिस्टर जया जॉर्ज ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर विद्यालय में प्रवास करने हेतु आभार ज्ञापित किया।

३१ मार्च। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः नंगुनेरी से सेन्कुलम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में मुण्डअडैयु के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। विहार के दौरान एक स्थान पर जालौर के एक जैन भाई ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर विहार मार्ग से कुछ भीतर स्थित एक मकान में पधारने हेतु निवेदन किया। उन्होंने बताया कि कन्याकुमारी जाने अथवा वहां से लौटने वाले जैन साधु-साध्वियों का प्रवास यहां होता है। आचार्यप्रवर ने उन्हें मार्ग से ही मंगलपाठ सुनाया। करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सेन्कुलम में स्थित अलागु महल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में वाणी संयम और वाणी विवेक की प्रेरणा प्रदान की।

मध्याह्न में तिरुवेनवेली के कमिश्नर श्री भास्करन ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया।

सायंकाल करीब ५.१५ बजे सेन्कुलम से प्रस्थित होकर लगभग ३.५ कि.मी. का विहार करते हुए तक्कारामालपुरम स्थित रोस मेरी कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड साइंस में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। सम्मुखीन लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आज इस विद्यालय में व्यापक स्तर पर तैयारियां चल रही थीं। इस प्रक्रिया से जुड़े हुए अनेक व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए।

वी सपोर्ट अहिंसा यात्रा

१ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः तक्काराम्मालपुरम से तिरुनेलवेली की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में एक स्थान पर लोकसभा चुनाव के संदर्भ में कार्यरत चुनाव अधिकारी और सीआरपीएफ के सशस्त्र जवानों ने पूज्यप्रवर को सादर वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। सीआरपीएफ के जवान पूज्यप्रवर के निकट पहुंचे। उनमें से कोई जवान उत्तराखण्ड से था तो कोई हिमाचल प्रदेश से और कोई राजस्थान से। आचार्यप्रवर ने उन्हे मंगल प्रेरणा भी प्रदान की। तिरुनेलवेली के नागरिक भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

लगभग १३.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर तिरुनेलवेली में पधारे। विवेकानन्द विद्याश्रम मेट्रिक हायर सैकेण्ड्री स्कूल में आज का प्रवास हुआ। विद्यालय के मुख्यद्वार से प्रवास स्थल तक प्रिंसिपल तिरुमाइन आदि शिक्षक और विद्यार्थी पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा उच्चरित 'वन्दे गुरुवरम' और 'वी सपोर्ट अहिंसा यात्रा' के घोष से विद्यालय परिसर गुंजायमान हो उठा। आज विद्यालय में परीक्षा समायोजित हो रही थी। उसके बावजूद विद्यालय प्रबंधन ने अहिंसा यात्रा के लिए अपनी ओर से यथासंभव स्थान उपलब्ध करवाने का प्रयास किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'भोग्य पदार्थ न तो समता को पैदा कर सकते हैं और न ही विकृति को पैदा कर सकते हैं। मूलतः आत्मा राग-द्वेष करने वाली होती है। आसक्ति आदमी को पतन की ओर ले जाने वाली होती है। आदमी जितना कामभोगों में मूर्च्छित होता है, उसकी चेतना उतनी सुषुप्ति की ओर जा सकती है। आदमी को अतिआसक्ति में नहीं जाना चाहिए। इन्द्रिय विषयों में आसक्ति करने वाला व्यक्ति अपना नुक्सान कर लेता है। इन्द्रिय नियंत्रण के द्वारा जीवन में शुभ का संचार किया जा सकता है।

साधु को तो इन्द्रिय संयम रखना ही चाहिए, गृहस्थ के लिए भी एक सीमा तक इन्द्रिय संयम रखना अपेक्षित होता है। सम्यक्दृष्टिपूर्वक इन्द्रिय संयम रखने वाला व्यक्ति आत्माहित भी साधता है और अनेक प्रकार की बाह्य समस्याओं से भी मुक्त रह सकता है।

जीवन के लिए भोजन होता है, न कि जीवन भोजन के लिए होता है। इसी प्रकार धन भी जीवन के लिए होता है, न कि जीवन धन के लिए होता है। थोड़े से समय के स्वाद के लिए अहितकर भोजन नहीं करना चाहिए। बीमारी आदि की स्थिति में नहीं खा पाना अलग बात है, वैराग्य भावना से खाने आदि का संयम करना महत्त्वपूर्ण है। आदमी इन्द्रियों का गुलाम न बने, इन्द्रियां उसके नियंत्रण में रहे, यह काम्य है।'

विद्यालय की सीनियर प्रिंसिपल श्रीमती राजलक्ष्मी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूं कि आज मुझे जैन तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत करने का सुअवसर मिला है। यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आचार्यश्री ने ४६००० से ज्यादा किलोमीटर की पदयात्रा कर ली है। आप अपनी यात्रा के द्वारा मानव-मानव को कल्याण की राह दिखा रहे हैं। आचार्यश्री का जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। आज के इस दौर में महापुरुष आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा अत्यन्त प्रासंगिक है। मैं आचार्यश्री और उनके साथ समागत साधु-साध्वियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करती हूं।'

कार्यक्रम के दौरान सिंगमपट्टी के राजा टी.एन.एस. मुरुगादोस तीर्थपति पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। उन्होंने पूज्यचरणों में उपहार स्वरूप एक वस्त्र प्रस्तुत किया, साधुचर्या नियमों के अनुरूप न होने के कारण

आचार्यप्रवर उस वस्त्र को स्वीकार न कर मात्र उनकी भावना को स्वीकार किया। आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की तो वे बोले--'यह यात्रा और इसके उद्देश्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे आपके दर्शन करने और यात्रा में सम्मिलित होने का अवसर मिला।'

आचार्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिसर में उत्सव का-सा वातावरण था। शिक्षक, विद्यार्थी और उनके अभिभावक पूज्यप्रवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। परीक्षा की संपन्नता के उपरान्त शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें उन्हें जीवन विज्ञान के विषय में अवगति देने और प्रयोग करवाने का उपक्रम रहा।

आज तिरुवेनवेली के असिस्टेंट कमिश्नर श्री वेंकटाकृष्णन पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल मार्गदर्शन से लाभान्वित हुए।

स्तुत्य है आचार्यश्री का अभियान

२ अप्रेल। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः तिरुनेलवेली से शंकरनगर के लिए प्रस्थित हुए। आज के गंतव्य स्थल की दूरी भी ज्यादा नहीं थी और सूर्य किरणों में भी आज इतना तीखापन नहीं था। पूज्यप्रवर ने मार्ग में एक स्थान पर आसीन होकर बीकानेर के श्री मूलचंद बोथरा परिवार के कुछ बालकों से (पच्चीस बोल) आदि को आंशिक रूप में सुना। इन दिनों प्रायः प्रतिदिन विहार के दौरान जब बोथरा परिवार के सदस्य पूज्यप्रवर के दर्शन करते हैं, आचार्यप्रवर उनका कंठस्थ ज्ञान सुनते हैं। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह उन बालकों का उत्साहवर्धन करता हुआ उनमें और अधिक ज्ञान कंठस्थ करने की प्रेरणा भर देता है। पूज्यप्रवर लगभग ८.५ कि.मी. का विहार कर शंकरनगर में स्थित सार्थ मेट्रिकुलेशन स्कूल में पधारे।

विद्यालय के ऑनर श्री ए.पी.एस. आरमुगम स्वामी पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में चेन्नई से सपरिवार तिरुवेनवेली पहुंचे और पूज्यप्रवर का सोल्लास स्वागत किया। प्रिंसिपल उमा शेखरन आदि शिक्षिकाओं ने अपनी परंपरानुसार आचार्यप्रवर की आरती की। कतारबद्ध और करबद्ध खड़े विद्यार्थियों ने 'वन्दे गुरुवरम' और 'वी सपोर्ट अहिंसा यात्रा' के बुलंद उच्चारण कर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की।

विद्यालय में चल रही परीक्षा के कारण आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम समीपस्थ 'शिवानंदी आदित्य नारायण महल' में समायोजित हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाध्याय का भी बहुत महत्त्व होता है। शास्त्रकार ने कहा कि नींद को बहुमान मत दो। नींद भी स्वाध्याय का एक बाधक तत्त्व है। आवश्यकतावश नींद लेना एक बात है, अनावश्यक सोने में समय नहीं गंवाना चाहिए। आदमी को ज्यादा नहीं हंसना चाहिए और अट्टहास भी नहीं करना चाहिए। कामात्मक और व्यर्थ बातों में भी रस नहीं लेना चाहिए। स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति के लिए समर्पित व्यक्ति ज्ञान के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त कर सकता है। यथासंभव प्रतिदिन कुछ न कुछ ज्ञानार्जन का प्रयत्न रहना चाहिए। कंठस्थ ज्ञान की सुरक्षा के लिए उसका पुनरावर्तन भी अपेक्षित होता है।'

परीक्षा के कारण शिक्षक और विद्यार्थी मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो पाए। इसलिए विद्यालय प्रबंधन के अनुरोध पर उनके लिए करीब १२.१५ बजे से विशेष कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में शिक्षिका श्रीमती लतामूर्ति ने आचार्यप्रवर का परिचय प्रस्तुत किया।

विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती उमा शेखरन ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी एक ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनमें विनम्रता, गंभीरता, वैदुष्य और आध्यात्मिकता जैसी विशेषताओं का संगम है। आप एक परम पवित्र आत्मा और महान विचारक हैं। आपकी भीतरी प्रज्ञा जागृत है। अहिंसा, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए आप अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र और स्वस्थ विश्व की कल्पना के साथ शांतिदूत आचार्यश्री मूल रूप से सामाजिक बुराइयों के निराकरण के द्वारा समाजोत्थान का महान

कार्य कर रहे हैं। आपका यह अभियान स्तुत्य है। आपने अपनी इस यात्रा में हजारों-हजारों व्यक्तियों का जीवन परिवर्तन कर मानव कल्याण का महान कार्य किया है और निरंतर कर रहे हैं। हम आपके चरणो में अपना सादर प्रणाम निवेदित करते हैं।'

विद्यालय के ऑनर श्री आरमुगम स्वामी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। विद्यालय की छात्राओं ने नमस्कार महामंत्र के आधार पर अपनी प्रस्तुति दी। मुनि अनेकांतकुमारजी ने तमिल भाषा में आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा का परिचय प्रस्तुत किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में प्रदत्त अपने मंगल उद्‌बोधन में जैन धर्म, साधुचर्या, अहिंसा यात्रा की अवगति देते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों और विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर से उत्प्रेरित होकर अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

तिरुवेनवेली में बालोतरा का एक तेरापंथी सालेचा परिवार और अन्य जैन समाज के करीब चालीस परिवार प्रवासित हैं। आज उन परिवारों के सदस्यों को भी पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

आप इंसान नहीं, भगवान हैं

३ अप्रेल। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः शंकरनगर से गन्नैकोन्डन की ओर प्रस्थित हुए। सार्थ मेट्रिकुलेशन स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती उमा शेखरन ने श्रीचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। मार्ग में शंकर हायर सैकेण्ड्री स्कूल के शिक्षक श्री जी.एस. षण्मुगवल ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। गत रात्रि में साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का प्रवास इसी विद्यालय में हुआ था। आचार्यप्रवर ने श्री षण्मुगवल को विद्यालय के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की। मार्ग में परिपार्श्व में लगा एक बोर्ड आसपास के क्षेत्र को चित्तीदार हिरणों के अभयारण्य के रूप में दर्शा रहा था।

साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का आज का प्रवास पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल से करीब सात सौ मीटर पहले स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में था। आचार्यप्रवर मार्ग में उस विद्यालय में पधारे। साध्वियों ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदन किया। कुछ समय वार्तालाप के पश्चात् आचार्यप्रवर पुनः अपने प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हो गए।

करीब ११.० कि.मी. विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर गन्नैकोन्डन में स्थित नम्माऊरु ग्लोबल स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के चेयरमेन श्री आर.मारी कार्तिकेयन, प्रिंसिपल पद्मश्री राजगोपाल आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर का पदार्पण विद्यालय से संबंधित लोगों को उत्फुल्ल बनाए हुए था। विद्यालय के चेयरमेन श्री आर.मारी कार्तिकेयन को अपने इस विद्यालय में आचार्यप्रवर के पदार्पण की सूचना मिली तो वे इस अवसर का लाभ उठाने ऑस्ट्रलिया से पहुंच गए। वे और उनके पिता डॉ. एम. राजगोपाल आदि परिजन आज आचार्यप्रवर की सेवा का सुअवसर प्राप्त कर स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभूत कर रहे थे।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'चार चीजों को दुर्लभ कहा गया है। उनमें पहली है--मनुष्यता। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव जन्म कभी-कभी और किसी-किसी को प्राप्त होता है। दूसरी दुर्लभ चीज है--श्रुति। धर्म श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है। श्रद्धा तीसरी दुर्लभ चीज है। सुनने के बाद भी श्रद्धा का होना दुर्लभ है। चौथी दुर्लभ चीज है--संयम में पराक्रम।

आदमी को प्राप्त मानव जीवन का अच्छा लाभ उठाना चाहिए। उसके लिए संयम और तप की साधना करनी चाहिए। जिस व्यक्ति के जीवन में संयम और तप की साधना होती है, वह इस दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक बना सकता है।'

पूज्यप्रवर ने विद्यालय के ऑनर, उनके परिजनों, शिक्षकों आदि को अंग्रेजी भाषा में अहिंसा यात्रा, जैन धर्म, साधुचर्या आदि के विषय में अवगति देते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय के चेयरमेन के पिता डॉ. एम. राजगोपाल ने कहा--'मैं हमारे विद्यालय नम्माऊरु ग्लोबल स्कूल की ओर से अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण का सादर स्वागत करते हुए स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा हूं। आपने अपने पवित्र चरणों से हमारे विद्यालय को पावन कर हम पर आशीर्वाद बरसाया है। आपका पदार्पण हमारे लिए एक वरदान है। अहिंसा यात्रा के तीन मिशन सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति आज के इस दौर में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि एक इंसान ४६००० कि.मी. से ज्यादा की पदयात्रा कर सकता है, लेकिन आपने इसे कर दिखाया है। मुझे तो ऐसा लगता है कि आप इंसान नहीं, भगवान हैं। आज आपने हमारे विद्यालय में पधारकर हमें धन्य किया, इसके लिए हम आपके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। हम लोग ही नहीं, इस विद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थी भी आपका आशीर्वाद पाकर स्वयं को परम सौभाग्यशाली महसूस कर रहे हैं। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि आप चिरकाल तक जीएं और इस दुनिया को नई राह दिखाते रहें।'

आपके पदार्पण से पवित्र हो गया हमारा परिसर

४ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः गंगैकोंडन से कयाथर की ओर प्रस्थान किया। प्रस्थान के कुछ ही समय पश्चात् सामने से आ रही तपागच्छ मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्यश्री भद्रगुप्तसूरिजी की शिष्याएं तथा मुनिश्री जम्बूविजयजी की आज्ञानुवर्ती साध्वी संयमपूर्णाश्रीजी आदि तीन साध्वियां मिलीं। साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उनसे कहा--'पुनः मिलना हो गया।' वे बोलीं--आपने हमें पहचान लिया। हम तो धन्य हो गईं। मायावरम् में आपके दर्शन हुए थे, अब हमारा चतुर्मास कोच्चि में है। आज अचानक पुनः आपके दर्शन हो गए, बहुत खुशी हुई।' इस प्रकार संक्षिप्त वार्तालाप के उपरान्त आचार्यप्रवर अपने गंतव्य स्थल की ओर आगे बढ़ गए और साध्वियां अपने गंतव्य की ओर।

सूर्योदय के कुछ ही समय पश्चात् तीव्र धूप ने वातावरण को अपने पाश में आबद्ध कर लिया और सूर्य के उर्ध्वारोहण के साथ उसकी प्रखरता क्रमशः बढ़ती जा रही थी। सूर्य किरणों की तीव्रता और हवा की मंदता आचार्यप्रवर के शरीर को पसीने से नहला रही थी, किन्तु आचार्यप्रवर उसकी परवाह किए बिना निरंतर गंतव्य की ओर गतिमान थे। विहार के दौरान सानादापुदुकुडी के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब १०.८ कि.मी का विहार कर कायाथर में स्थित बाबा मेट्रिकुलेशन हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। स्कूल के ट्रस्टी श्री वीर पांडेयन, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'हाजरी' के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए अपने पावन प्रवचन में कहा--'शरीर आंखों से दिखाई देता है। मन, वाणी, श्वास आदि दृश्य नहीं हैं। शरीर के द्वारा व्यक्ति की पहचान भी होती है। शरीर को नौका, जीव को नाविक और संसार को अर्णव (सागर) कहा गया है। संसार रूपी सागर को तैरने के लिए शरीर रूपी नौका साधन बन सकती है। शरीर साधना में सहयोगी बनता है। शास्त्रकार ने मानों हमें आगाह किया कि जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, व्याधि जब तक बढ़ न जाए और इन्द्रिय शक्ति क्षीण न हो जाए, तब तक धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए। बुढ़ापा पीड़ित करना शुरु कर देता है, उसके बाद सेवा धर्म की आराधना कठिन हो सकती है। इसी प्रकार व्याधियों के बढ़ने पर अथवा इन्द्रिय शक्ति क्षीण होने के बाद सेवा धर्म का समाचरण मुश्किल हो सकता है। इसलिए आदमी को शरीर की सक्षम अवस्था में यथासंभव सेवा करने का प्रयत्न करना चाहिए।

आदमी को शरीर की सक्षमता और स्वस्थता के प्रति जागरूक रहना चाहिए। उसे कार्य से जी नहीं चुराना चाहिए। श्रम से व्यक्ति श्रमण बनता है। श्रम नहीं है तो व्यक्ति एक संदर्भ में अश्रमण बन जाएगा। श्रम का एक अर्थ है--तपस्या। जो तपस्या करने वाला होता है, वह श्रमण होता है। परिश्रम से निष्पत्ति आ सकती है। जीवन

में अच्छा श्रम करने का प्रयास करना चाहिए।

परिश्रम शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में हो सकता है। श्रम से भोजन करना सार्थक हो सकता है। कोई भी आदमी निट्ठल्ला, निकम्मा क्यों रहे। हर हाथ को कार्य और हर हाथ को भोजन मिले तो संतुलन बना रह सकता है। अन्यथा असंतुलन की स्थिति हो सकती है। श्रम के साथ विश्राम भी अपेक्षित होता है। यह भी कहा गया है कि कार्यान्तरण भी एक प्रकार का विश्राम होता है। अपेक्षित विश्राम करना एक बात है, किन्तु जीवन में आलसीवृत्ति को स्थान नहीं मिलना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के प्रसंग में 'हाजरी' का वाचन किया। तदुपरान्त मुनि नमनकुमारजी और बालमुनि शुभम्कुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। सभी साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेख पत्र उच्चरित किया।

विद्यालय के ट्रस्टी श्री वीर पांडेयन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज यह विद्यालय परिसर परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से पवित्र हो गया। मुझे गर्व है कि हमारे विद्यालय की प्रथम शिक्षा अनुशासन हैं और आचार्यश्री ने आज हमें पन्द्रह दिनों मे दिए जाने वाले अनुशासन का पाठ (हाजरी) दिया है। हमारा राष्ट्र कभी भी अवनति को प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि इसके गौरव की रक्षा आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष कर रहे हैं। मुझे आज बहुत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आचार्यश्री के पदार्पण से हमारा यह परिसर अध्यात्म की तरंगों से तरंगित बना हुआ है।'

पूज्यप्रवर ने उन्हें विद्यालय के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की।

सच्चाई की साधना के लिए आवश्यक है साहस

५ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कायाथर से विल्लीसेरी की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में सालेपुदुर के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ७ पर गतिमान आचार्यप्रवर के दांयीं ओर स्थित सूर्य प्रखरता के साथ आतप बरसा रहा था। राजमार्ग के आसपास वृक्षों की अल्पता के कारण विहार पथ पर छाया प्रायः नहीं थी। मार्ग के दोनों ओर दूर-दूर तक पवनचक्कियां दृष्टिगोचर हो रही थीं। विल्लीसेरी के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर करीब ११.७ कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर विल्लीसेरी में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में ऐसी स्थितियां भी आ सकती हैं, जहां यथार्थ बोलने से तात्कालिक रूप में कुछ नुक्सान हो सकता है और अयथार्थ बोलने से तात्कालिक रूप में नुक्सान होने से बचाव हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में भी यदि आदमी मिथ्याभाषण न करे तो वह अच्छी बात होती है। सच्चाई की साधना के लिए साहस भी अपेक्षित होता है। साहस के बिना सच्चाई के पथ पर चलना कठिन होता है। सच्चाई के पथ पर चलने वाले व्यक्ति को कुछ परेशान होना पड़ सकता है, किन्तु अंतिम विजय सत्य की होती है। आदमी मुसीबतों से बचने के लिए अयथार्थ का सीधा रास्ता ले सकता है, किन्तु वह मार्ग आदमी को खराब मंजिल पर ले जा सकता है। सत्य का पथ उबड़-खाबड़ हो तो भी वह अच्छी मंजिल तक पहुंचाने वाला होता है।

साधु के तो तीन करण तीन योग से जिन्दगीभर के लिए मृषावाद के त्याग होते हैं। गृहस्थ को भी यथासंभव झूठ से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी पर झूठा आरोप लगाकर उसे फंसाने का प्रयास मानों खुद को ही फंसाने का होता है। दूसरों पर झूठा आरोप लगाकर अपने चित्त और अपनी आत्मा को मलिन नहीं बनाना चाहिए। आदमी को न अपने लिए और न ही दूसरे के लिए झूठ बोलना चाहिए। न गुस्से के कारण झूठ बोलना चाहिए और न ही भय के कारण झूठ बोलना चाहिए।

कार्यक्रम के उपरान्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री ए. वल्लाल ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर विद्यालय परिसर में प्रवास करने हेतु पूज्यचरणों में आभार अर्पित किया। आज एम.डी.एम.के. पार्टी की कोविलपट्टी शाखा के सेक्रेट्री श्री अलगर स्वामी, डी.एम.के. पार्टी की कोविलपट्टी शाखा के सेक्रेट्री श्री वी. मुरुगेशन, नलाट्टिनपुदुर की ग्राम पंचायत के मुखिया श्री सेल्वकुमार आदि ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

साक्षात् ईश्वर आए हैं

६ अप्रेल। चैत्र शुक्ला प्रथमा। नव संवत्सर। वि.सं. २०७६ का शुभारंभ। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः विल्लीसेरी से नलाट्टिनपुदूर की ओर प्रस्थित हुए। विल्लीसेरी के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त की। मार्ग के परिपार्श्वस्थ खेतों में यत्र-तत्र दिखाई दे रहे मोर जैन विश्व भारती की स्मृति करा रहे थे। विहार पथ के खेतों में कहीं-कहीं चावल, मिर्च, भिंडी आदि की खेती दिखाई दे रही थी, शेष खेत तो सूखी अवस्था में ही नजर आ रहे थे। पूज्यप्रवर लगभग ६.१ कि.मी. का विहार कर नलाट्टिनपुदूर में स्थित सेंट फ्रांसिस डीसेल्स मेट्रिकुलेशन हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार पर प्रिंसिपल फादर श्री डी. अमृत राजन, अन्य शिक्षक और विद्यार्थी पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही उन्होंने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष में विराजमान होने के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर नववर्ष के संदर्भ में पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुना। उस समय एक तात्त्विक जिज्ञासा के संदर्भ में अनौपचारिक गोष्ठी-सी आयोजित हो गई।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में एक कथानक के माध्यम से सामान्य धर्म के सात सूत्रों की चर्चा की।

विद्यालय के प्रिंसिपल फादर श्री डी. अमृत राजन ने कहा--'आज मैं बहुत खुश हूं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे इस विद्यालय प्रांगण में पधारे हैं। आचार्यश्री सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं। ईश्वर सर्व शक्तिमान, सर्वदर्शी और सर्वज्ञ होते हैं, किन्तु वे आचार्यश्री जैसे महापुरुषों के माध्यम से ही धरती पर कार्य करते हैं। आज आचार्यश्री ने यहां आकर हमारे इस स्थान को पवित्र बनाया है। आपकी उपस्थिति से ऐसा लग रहा है कि यहां साक्षात् ईश्वर ही उपस्थित हैं। अहिंसा यात्रा के उपयोग के लिए जब मैंने हमारे इस स्थान की स्वीकृति दी थी, तब मैंने यह नहीं सोचा था कि इतने महान संत हमारे यहां आएंगे। आज मैं यहां सच में आचार्यश्री के रूप में भगवान की उपस्थिति महसूस कर रहा हूं। हमारा यह विद्यालय आचार्यश्री के पदार्पण से अध्यात्म की सौरभ से भर गया है। मेरे पास आपके स्वागत के लिए शब्दों का अभाव है। मैं अपने हाथ जोड़कर और सिर को झुकाकर आपको बार-बार प्रणाम करता हूं तथा स्वागत करता हूं।'

पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की।

कोविलपट्टी में तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें पट्टधर

७ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः नलाट्टिनपुदूर से कोविलपट्टी की ओर प्रस्थित हुए। कोविलपट्टी के उत्साहित श्रद्धालु सूर्योदय से पूर्व ही पूज्यसन्निधि में पहुंच गए। रविवार होने के कारण तमिलनाडु और कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों के लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित थे। इस प्रकार श्रद्धालुओं की उपस्थिति अच्छी संख्या में हो गई।

करीब आधी सदी बाद अपनी कर्मभूमि में अपने आराध्य के आगमन से कोविलपट्टी के पांच श्रद्धालु परिवार अतिशय आहलादित थे। जैनेतर समाज में भी अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर के पदार्पण से उल्लास का वातावरण था। माचिस की तिली और पटाखों के उत्पादन के क्षेत्र में अपनी पहचान रखने वाले इस क्षेत्र में ज्योतिचरण

आचार्यप्रवर अपनी आध्यात्मिक ज्योति से जनता के अन्तस् को ज्योतित करने हेतु प्रविष्ट हो रहे थे। स्वागत जुलूस के साथ पूज्यप्रवर कोविलपट्टी के सौभाग्य महल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। सौभाग्य महल के ऑनर श्री श्रीनिवासन ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में धर्म का महत्त्व है, क्योंकि उसकी आराधना से यह जीवन भी अच्छा बनता है और आगे का जीवन भी अच्छा बन सकता है। धर्म के अनेक अंग हैं। संक्षेप में उसके तीन अंग हैं--अहिंसा, संयम और तपस्या। अहिंसा एक ऐसा तत्व है, जो सुख पैदा करने वाला होता है। हिंसा से दुःख पैदा होते है। जिसकी हिंसा की जाए, वह भी दुःखी होता है और जो हिंसा करता है, उसे भी दुःखी बनना पड़ता है। अहिंसा सब प्राणियों के लिए कल्याणकारी होती है।'

कोविलपट्टी आगमन के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'परम पूज्य गुरुदेव तुलसी यहां पधारे थे। करीब पचास वर्षों के बाद आज हम भी कोविलपट्टी में आए हैं। यहां के लोगों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संस्कार रहें।'

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित कोविलपट्टीवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। तमिलभाषी लोगों को आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान कर तीनों संकल्प स्वीकार कराए।

सौभाग्य महल के ऑनर श्री श्रीनिवासन ने आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'हमारे इस परिसर में मैं अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का बहुत-बहुत स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। आचार्यश्री जनकल्याण के लिए बहुत लम्बी पदयात्रा कर रहे हैं।'

माचिस एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री परमशिवम ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'किसी भी प्रकार का आडम्बर न करने वाले, धन-दौलत से दूर रहने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी वास्तव में सच्चे गुरु हैं, मैं आपका कोविलपट्टी आगमन पर हृदय से स्वागत करता हूं। भारत की ऋषि परंपरा बहुत-बहुत समृद्ध रही है। आचार्यश्री महाश्रमणजी उस परंपरा के एक उदाहरण हैं। आचार्यश्री ऐसे संत है, जो न धन रखते हैं, न स्वयं खाना बनाते हैं और न ही खाना बनवाते हैं, कपड़े भी बहुत सीमित मात्रा में रखते हैं। सूर्यास्त से सूर्योदय तक भोजन ही नहीं, पानी भी ग्रहण नहीं करते हैं। इस प्रकार स्वयं और दूसरों का कल्याण करने वाले आचार्यश्री सचमुच एक महापुरुष हैं। प्राचीनकाल में ऋषि-मुनि गुफाओं में रहकर अठारह सिद्धियां प्राप्त करते थे, लेकिन आचार्यश्री ने तो जनता के बीच रहकर सिद्धि को प्राप्त किया है, कर रहे हैं। आपके उपदेशों पर चलने वाला व्यक्ति कभी दुःखी नहीं हो सकता। मैंने और मेरे परिवार ने आपका उपदेश सुनकर मांसाहार छोड़ दिया है।'

एवरेस्ट ग्रुप के चेयरमेन श्री रामचंद्रन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदार्पण से कोविलपट्टी की धरती पावन हो गई। आपका यह आगमन यहां के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा। हम अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानते हैं कि आज पदयात्रा करने वाले एक महान संत के दर्शन का सुअवसर हमें मिला है। आप स्वयं तो महान हैं ही, कितने लोगों को भी आप महान बनाते हैं।'

श्री किशनलाल डागा, श्रीमती खुशबू डागा, श्री पन्नालाल डागा, श्री नवरत्नमल डागा और श्रीमती बेला कोठारी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। डागा परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। श्रीमती दिव्या आंचलिया और श्रीमती बेला कोठारी ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्री कृष्णमूर्ति नामक एक नागरिक पूज्यप्रवर को अर्पित करने के लिए कई फल लेकर आया। पूज्यप्रवर ने उसे साधुचर्या की अवगति प्रदान की।

सूर्यास्त के उपरान्त आचार्यप्रवर सौभाग्य महल से प्रस्थान कर निकटस्थ श्री जतनलाल डागा परिवार के निवास स्थान पर पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। इस सौभाग्य को प्राप्त कर सरदारशहर का यह डागा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

विद्यालय में छा गई सकारात्मक ऊर्जा

८ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः कोविलपट्टी से शिवानैन्थापुरम् की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कोविलपट्टी के अनेक श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सौभाग्य मिला। मार्ग में एक स्थान के विषय में लोगों ने बताया कि करीब पचास वर्ष पूर्व आचार्य तुलसी ने यहां प्रवास किया था। उस समय यहां एक तेरापंथी परिवार का निवास स्थान था, आज यहां बैंक है। आज का विहार छोटा ही था, किन्तु सूर्य आज भी तीव्र तपिश लिए हुए रहा।

लगभग ७.६ कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर शिवानैन्थापुरम् में पधारे। श्रीकारा विद्या मंदिर में आज का प्रवास हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार पर विद्यालय के चेयरमेन श्री ए. सेन्थिलकुमार, कोरस्पोंडेंट श्रीमती श्यामला सेन्थिलकुमार, एक्ज्यूकेटिव डायरेक्टर श्रीमती तेंजिंग पालराजन, एडमिनिस्ट्रेशन डायरेक्टर टी. कन्नन, प्रिंसिपल राधा मुरली, वाइस प्रिंसिपल श्री मुत्तूकुमार, अन्य शिक्षकों आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिसर में उत्सव का वातावरण था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में तीन वणिक पुत्रों के दृष्टांत के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'तीन प्रकार के व्यक्ति होते है। पहला वह जो पापों में समय को गंवाता है और वह मरकर नरक या तिर्यंच में पैदा होता है अर्थात् मनुष्य जन्म रूपी मूल पूंजी को गंवा देता है। दूसरा व्यक्ति ज्यादा धर्म भी नहीं करता और ज्यादा पाप नहीं भी करता, वह मरकर पुनः मनुष्य बन जाता है अर्थात् मनुष्य जन्मरूपी मूल पूंजी की सुरक्षा कर लेता है। तीसरा व्यक्ति धार्मिकता का जीवन जीता है, साधना करता है, साधुत्व स्वीकार करता है/श्रावकत्व का पालन करता है। वह मरकर देवगति में या मोक्षगति में चला जाता है अर्थात् मूल पूंजी को बढ़ा लेता है। आदमी को प्राप्त मानव जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। उसे सार्थक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। दुर्लभ मानव जीवन को व्यर्थ गंवा देना तो मनुष्य की मूढता, नादानी होती है।

कार्यक्रम में उपस्थित सैंकड़ों विद्यार्थियों को परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में पावन प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय की कोरस्पोंडेंट श्रीमती श्यामला सेन्थिलकुमार ने कहा--'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का हमारे इस विद्यालय में स्वागत करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हम सभी सौभाग्यशाली है कि हमें आपका आशीर्वाद प्राप्त करने का महान अवसर मिला है। विद्यार्थियो! आचार्यश्री की प्रेरणा को हमें अपने जीवन में उतारकर हमारे भविष्य को सुन्दर बनाना है।'

एक्ज्यूकेटिव डायरेक्टर श्री तेंजिंग पालराजन ने कहा--'आज हमारे इस श्रीकारा स्कूल में दुनिया की महान विभूति आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हुआ है, इसलिए हम सभी बहुत अभिभूत हैं। ऐसे महापुरुष के पदार्पण से हमारा यह स्थान धन्य हो गया। आचार्यश्री जब से इस विद्यालय में पधारे हैं, तब से मैं यहां बहुत सकारात्मक ऊर्जा को महसूस कर रहा हूं। आचार्यश्री का संदेश हम सबके लिए बहुत कल्याणकारी है।'

विद्यालय की प्रिंसिपल राधा मुरली ने विद्यालय की ओर से कार्यक्रम का संचालन करते हुए आचार्यप्रवर का परिचय प्रस्तुत किया। विद्यालय की एक छात्रा ने 'भारत नाट्यम' की प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में प्रणति अर्पित की। छात्राओं ने प्रार्थना को प्रस्तुति दी।

तावड़ा धीमो पड़ज्या रे

पूज्यप्रवर और साध्वियों का आज दिन का प्रवास एक ही इमारत में हो रहा था। इसलिए यह अपेक्षित था

कि या तो आचार्यप्रवर आदि संत अन्यत्र रात्रि प्रवास करें या साध्वियां अन्यत्र रात्रि प्रवास करें। आगामी गंतव्य स्थल करीब साढ़े सात कि.मी. दूर था, इसलिए यह स्पष्ट संभावित था कि जो भी विहार करेंगे, उन्हें कुछ कड़ी धूप में चलना होगा। इस संदर्भ में आचार्यप्रवर की सन्निधि और साध्वीप्रमुखाजी की उपस्थिति में चिंतन चला तो आचार्यप्रवर ने फरमाया--'हम ही विहार कर देते हैं।' साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'आचार्यप्रवर फरमाएं तो हम लोग विहार कर दें। आचार्यप्रवर ने फरमाया--'संतों की संख्या कम है और साध्वियों की अधिक। इसलिए ५४ साध्वियों को कष्ट देने की अपेक्षा मेरे सहित ३८ संत विहार कर देते हैं।' साध्वीप्रमुखाजी ने पुनः साध्वियों के विहार के लिए निवेदन किया, किन्तु आचार्यप्रवर ने उसे स्वीकार नहीं किया और करीब साढ़े चार बजे के आसपास स्वयं का विहार करना निर्धारित कर दिया। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह से साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां श्रद्धाप्रणत थीं।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार करीब साढ़े चार बजे आचार्यप्रवर ने शिवानैन्थापुरम् से प्रस्थान किया तो धूप कुछ तीव्रता लिए हुए थी। साध्वियों ने एक गीत का संगान प्रारंभ कर दिया, जिसकी कुछ पंक्तियां नवरचित थीं तो कुछ पुरानी। पंक्तियां इस प्रकार हैं--

तावड़ा धीमो पड़ज्या रे।
म्हारा गुरुवर करै विहार सूरज बादल में छिपज्या रे।
तावड़ा धीमो पड़ज्या रे।।
चौपन जीवां नै साता दे ब्यार करै गुरुराज,
सुखै सुखै पधरावो प्रभुवर हरज्यो जग री प्यास।
तावड़ा धीमो पड़ज्या रे।।

मंगलभावों से पूरित इस गीत को सुनकर आचार्यप्रवर सहित उपस्थित लोगों के चेहरों पर मुस्कान दिखाई दे रही थी। विहार के दौरान प्रकृति ने मानों साध्वियों की मंगलभावनाओं को स्वीकार कर लिया। वेग के साथ बहने वाली हवा ने सूर्य के आतप के अहसास को मंद बना ही लिया। कुछ ही समय बाद ढलता हुआ सूर्य बादलों की ओट में छुप गया। यह दृश्य देखकर अनायास साध्वियों के द्वारा प्रस्तुत पंक्तियों की पुनः-पुनः स्मृति होने लगीं। लगभग ७.४ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर उप्पाथुर विलाकु में स्थित जीवीजी इन्टरनेशनल स्कूल में पधरे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय ट्रस्ट की सेक्रेट्री श्रीमती आर. वत्सलाऐवी, कोरस्पेंडेंट श्री आर. कन्नन आदि ने पूज्यप्रवर को वंदन कर भावपूर्ण स्वागत किया।

ऐतिहासिक तथ्य

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के भारत के अन्तिम छोर कन्याकुमारी में प्रवास के दौरान साथ में ३७ संत और ५४ साध्वियां थीं। उनके नाम पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं। करीब पचास वर्ष पूर्व परमपूज्य गुरुदेव तुलसी जब कन्याकुमारी में पधारे थे, तब उनके साथ १७ संत और २७ साध्वियां थीं। उनके नामों की प्राप्त सूची इस प्रकार है--

मुनिवृन्द

१.मुनिश्री नथमलजी (टमकोर) (बाद में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी)
२.मुनिश्री दुलीचन्दजी 'दिनकर'
३.मुनिश्री चंपालालजी कोतवाल (लाडनूं)
४.मुनिश्री सुमेरमलजी सुदर्शन
५.मुनिश्री बालचन्दजी (गंगाशहर)
६.मुनिश्री मधुकरजी (गंगाशहर)
७.मुनिश्री हीरालालजी (बीदासर)
८.मुनिश्री पानमलजी (गंगाशहर)
९.मुनिश्री श्रीचन्दजी (टमकोर)
१०.मुनिश्री दुलहराजजी
११.मुनिश्री रूपचन्दजी (सरदारशहर) (बाद में गणमुक्त)
१२.मुनिश्री किशनलालजी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

१३.मुनिश्री गुलाबचन्दजी
१४.मुनिश्री मनककुमारजी (बाद में गणमुक्त)
१५.मुनिश्री कनककुमारजी (बाद में गणमुक्त)
१६.मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी
१७.मुनिश्री विजयकुमारजी

साध्वीवृन्द

१.साध्वीश्री कमलूजी (जयपुर)
२.साध्वीश्री सोनांजी (साजनवासी)
३.साध्वीश्री कानकुमारीजी (सरदारशहर)
४.साध्वीश्री भीखांजी (लाडनूं)
५.साध्वीश्री केशरजी (लाडनूं)
६.साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (रतननगर)
७.साध्वीश्री जतनकुमारीजी (भैंसाणा)
८.साध्वीश्री संघमित्राजी (श्रीडूंगरगढ़)
९.साध्वीश्री कंचनकुमारीजी (लाडनूं)
१०. साध्वीश्री मंजुलांजी (लाडनूं) (बाद में गणमुक्त)
११.साध्वीश्री कमलश्रीजी (टमकोर)
१२.साध्वीश्री सरोजकुमारीजी (मुंबई)
१३.साध्वीश्री कनकप्रभाजी (लाडनूं) (वर्तमान में साध्वीप्रमुखा)
१४.साध्वीश्री ललितप्रभाजी (सरदारशहर)
१५.साध्वीश्री तिलकश्रीजी (सुजानगढ़)
१६.साध्वीश्री कनकलताजी (सरदारशहर) (बाद में गणमुक्त)
१७.साध्वीश्री जिनप्रभाजी (लाडनूं)
१८. साध्वीश्री शीलप्रभाजी (सरदारशहर)
१९.साध्वीश्री मंजुबालाजी (मोमासर)
२०. साध्वीश्री प्रेमलताजी (श्रीडूंगरगढ़)
२१.साध्वीश्री मंजुरेखाजी (बाव)
२२. साध्वीश्री विमलप्रभाजी (बीदासर)
२३.साध्वीश्री मधुरेखाजी (गंगाशहर)
२४. साध्वीश्री जिनरेखाजी (गंगाशहर)
२५.साध्वीश्री उषाकुमारीजी (सांडवा) (बाद में गणमुक्त)
२६. साध्वीश्री शांताकुमारीजी (गंगाशहर)
२७.साध्वीश्री चन्द्रप्रभाजी (सरदारशहर)

श्रेणी आरोहण का आदेश

२० फरवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने समणी दिव्यप्रज्ञाजी को ३ जुलाई २०१९ को बेंगलुरु में आयोज्य दीक्षा समारोह में साध्वी दीक्षा (श्रेणी आरोहण) प्रदान करने की घोषणा की है।

दीक्षा आदेश

६ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु करिश्मा बागरेचा (पारलू) को ३ जुलाई २०१९ को बेंगलुरु में समायोज्य दीक्षा समारोह में साध्वी दीक्षा प्रदान करना निर्धारित किया है।

ध्यातव्य तथ्य-

वर्ष २४ विज्ञप्ति अंक ४७ में 'भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग का प्रायश्चित्त' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित सूची में 'साध्वी शशिरेखाजी १३६० (वाव) एक मासिक छेद' भी पढ़ा जाए।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला